***मेरे मन में परीक्षा का भय सदैव बना रहता है। परीक्षा पूरे साल की मेहनत पर आधारित होती है। वह हमारे आगे का भविष्य भी निर्धारित करती है। परीक्षा के दिनों में मुझे भयानक सपने आते हैं। पुस्तकों को देखकर डर लगने लग जाता है। रह-रहकर यही सोचता रहता हूँ कि परीक्षा में यदि सफल नहीं हो पाया तो मेरा क्या होगा। ऐसा हाल मेरा ही नहीं हर विद्यार्थी का होता है। परीक्षा का डर इतना व्यापक होता है कि बच्चों को अधिकत्तर मानसिक तनाव झेलना पड़ता है। इस तनाव के रहते वह सोच-समझ नहीं पाते हैं। कई बच्चे तो इस तनाव के चलते आत्महत्या तक कर लेते हैं।***